28 MON

C-6 GENDER, SCHOOL & SOCIETY

बालिकाओं की शिक्षा के लिए अवसर

MAY '07

भारत में लड़कियों की शिक्षा अभी तक बहुत पिछड़ी बनी हुई है। यद्यपि स्वतन्त्र भारत में बहुत से प्रयास किये गये हैं और किये जा रहे हैं, फिर भी अभी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना शेष है।

"GPI" Gender Parity Indicator पाठशालाओं में भर्ती किये गये बालिकाओं और बालकों का अनुपात होता है। जबकि I GPI इन दोनों लिंगों में पूर्णतया समानता बतलाता है, भारत का GPI 0.838 है। पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंह ने यह स्वीकार किया था कि यद्यपि सरकार ने सर्वशिक्षा अभियान (SSA) जैसे कार्यक्रम चालू किये हैं, फिर भी अभी बहुत कुछ और करना शेष है। ताकि बालिकाएं शिक्षा में पिछड़ी न रह जाये।

29 TUE

सामाजिक कार्यकर्त्री मीरा खन्ना ने कहा - "माता-पिता आर्थिक प्राणी होते हैं। वे एक लड़की की शिक्षा पर धन का निवेश करने में कोई लाभ नहीं मानते।"

वास्तव श्रीकृष्ण ने यह बतलाया कि शैक्षिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाली लड़कियों की संख्या पाठशाला में शिक्षिकाओं के अनुपात में सीधे रूप से होती है।

APR '07

T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S
. . . 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29

Scanned by PDF Scanner

Y'07 30 WED

भारत में लिंग असमानता को वर्ष 2005 तक समाप्त करना था यदि यह तथ्य पूरा हो जाता है तो आज प्राथमिक पाठशालाओं में 60 लाख लड़कियाँ और होती हैं।

ii. लड़कियों की शिक्षा में बाधक कारक :

भारत में अभी तक लड़कियों का बहुत बड़ा प्रतिशत प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक पाठशालाओं में 60 लाख लड़कियाँ और होतीं। जो भ्रूण हत्या से प्रभावित है।

i) गाँवों और शहरी गन्दी बस्तियों के अधिकतर माता-पिता बहुत निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग के लोग होते हैं जो बहुत गरीब हैं वे इतने गरीब हैं, वे इतने गरीब हैं कि अपनी लड़कियों को पढ़ाने भेजने के लिए उनको पाठशाला की ड्रेस या अच्छे कपड़े, जूते, पुस्तकों, स्टेशनरी आदि भी प्रदान करना होता है। जिसके लिए उनके पास धन नहीं होता है,

31 THU

ii) इन निर्धन माता-पिताओं में स्वयं के अशिक्षित और पिछड़े हुए होने के कारण यह विचार होता है कि उनको अपनी लड़कियों को पढ़ाना परवाह है। इनके परिवारों में कई सन्तानें हैं लड़कियों को अपने छोटे भाई-बहनों को संभालने के लिए और घर का काम-काज

JUN '07

M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30

Scanned by PDF Scanner

करने के लिए घर पर ही रहना जरूरी होता है, क्योंकि उनके माता-पिता प्रायः मजदूरी या कोई काम करने या खेती आदि करने जाते हैं।

3. भारत की पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में अधिकतर पिछड़े हुए और परम्परागत लोगों में यह जबरदस्त सांस्कृतिक अभिनिति चली आ रही है कि लड़की तो उनके पास कुछ वर्षों तक ही रहेगी विवाह होने पर तो उसे दूसरे घर (परिवार) में जाना ही होगा, तो फिर उसको पढ़ाने-लिखाने पर क्यों खर्च किया जाये। इसलिए बहुत से परिवार अपने लड़कों को लड़कियों की अपेक्षा ले उत्तम भोजन, वस्त्र, सुविधाएँ व व्यवहार प्रदान करते हैं, और लड़कियों को बोझ समझा जाता है। कई मध्यमवर्ग के ग्रामीण और शहरी समाजों में भी यही प्रवृति कार्य करती है।

4) निर्धन परिवारों के लोग (विशेषकर निम्न जातियों / अनुसूचित जातियों और जनजातियों) मध्यम और उच्च वर्गों के घरों में अपनी छोटी-2 लड़कियों (7-8 वर्ष के ऊपर की आयु की) को नौकरानी का काम - सफाई, कपड़े धोने, खाना बनाने आदि के लिए अथवा स्थानीय उद्योग -

Scanned by PDF Scanner

धन्धों जैसे माचिस बनाना, बीड़ी बनाना, बारूद के खिलौने बनाना, आदि को करने के लिए रोजगार/कमाई के लिए भेज देते हैं। आर्थिक विवशता के कारण उन्हें ऐसा करना पड़ता है।

5) बहुत से गाँवों और बस्तियों में एक ही कॉमन प्राथमिक / माध्यमिक / उच्च माध्यमिक पाठशाला होती है। जिसमें लड़कों-लड़कियों को साथ-2 पढ़ना होता है। बहुत से माता-पिता अपनी लड़कियों को ऐसी पाठशाला में लड़कों के साथ वहाँ पढ़ने के लिए भेजना पसन्द नहीं करते क्योंकि वे सोचते कि लड़के उनको बिगाड़ देंगे।

6) जिन पाठशालाओं में पुरुष शिक्षक पढ़ाते हैं वहाँ लड़कियों के माता-पिता अपनी लड़कियों को इनमें पढ़ने नहीं भेजना चाहते हैं क्योंकि उन्हें पुरुष शिक्षकों द्वारा उनको बिगाड़ देने का आन्तरिक भय बना रहता है। कई पुरुष शिक्षकों के द्वारा छात्राओं के साथ दुर्व्यवहार करने व यौन शोषण करने के मामले गाँवों, कस्बों और शहरों में प्रकाश में आये हैं। अधिकतर युवा शिक्षकों के द्वारा छात्रों के साथ दुर्व्यवहार करने व यौनशोषण करने के मामले गाँवों, कस्बों और शहरों में प्रकाश में आये हैं।

Scanned by PDF Scanner